## रामधन एडवोकेट

जन्म : 13-6-46

स्थान : जाटव मौहल्ला
झज्जर ( हरियाणा )

शिक्षा : बी.ए.एल.एल.बी, डी.एल.एल

व्यवसाय : वरिष्ठ विधि सलाहकार
डी.डी.ए., नई दिल्ली

वर्तमान पता : सी-7/217 सफदरजंग
डव्लपमेंट एरिया, हौजखास,
नई दिल्ली-16

सम्मान : 'डा० अम्बेडकर फैलोशिप सम्मान' से
विभूषित

सम्प्रति : अध्यक्ष, भारतीय दलित साहित्य
अकादमी, दिल्ली प्रदेश

# कब तक ?

• रामधन एडवोकेट

# कब तक ?


लेखक

**रामधन एडवोकेट**

बी. ए., एल.एल.बी, डी.एल.एल.


*भूमिका–सन्दर्भ में*

डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

*राष्ट्रीय अध्यक्ष*

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

✪ *पुस्तक का नाम* : **कब तक?**

✪ *लेखक* : **रामधन एडवोकेट**

✪ *प्रकाशक* : **भारतीय दलित साहित्य अकादमी**
233, टैगोर पार्क, माडल टाउन,
दिल्ली-110009

✪ *प्रकाशन वर्ष* : 2001

✪ © *स्वामित्व* : **प्रकाशकाधीन**

✪ *मूल्य* : 20 **रुपये**

✪ *लेजर कम्पोजिंग* : **जे.डी. कंप्यूटर्स**
औट्रम लाइन, गुरु तेग बहादुर नगर,
दिल्ली-110009, फोन : 7118813

✪ *मुद्रक* : **वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स**
ए-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन
दिल्ली-110033

# सन्दर्भ में

बात सन 1978 की है जब बाबू जगजीवन राम जी भारत के उपप्रधान मंत्री थे। मैं उनके साथ कार में एक दलित सम्मेलन में भाग लेने आगरा जा रहा था। अभी गाड़ियों का काफला मथुरा से कुछ आगे ही बढ़ा था कि एक युवक ने बाबू जी की कार को रुकवाने के लिए हाथ दिया। बाबू जी ने कार रुकवा दी और उस युवक से पूछा– "क्या बात है?" उस युवक ने हांफते हुए कहा "बाबू जी, हम 'कब तक' यूं ही मरते रहेंगे? बात-बात पर पिटते और अपमानित होते रहेंगे? आप हमें भी हथियार दिला दो फिर हम भी निहत्थे नहीं रहेंगे, मारकर ही मरेंगे।" बाबूजी ने उसके कन्धे थपथपाते हुए कहा–"शाबाश। जब तुम मरना सीख जाओगे तब कोई तुम्हें मारने नहीं आयेगा। इसलिए मैं बार-बार कहता हूं कि मरना सीखोगे न जब तक, हर रोज मरोगे तब तक।"

श्री रामधन एडवोकेट दलित चिन्तक हैं, दलितों की विकट समस्याओं का उन्हें कटु अनुभव है। हम कौन थे? क्या थे? क्या हो गये? और हमें क्या होना है अभी? आदि प्रश्नों का उन्होंने गहन विश्लेषण किया है। पर अन्धविश्वास, रूढ़िवाद और संकीर्णता में धंसे दलित समाज में चेतना कब आयेगी? और वह अन्धकार में फंसा गुलामी करता रहेगा, कब तक? श्री रामधन ने दलितों की इन सभी समस्याओं का समाधान इस पुस्तक में किया है। कब तक? पुस्तक का शीर्षक स्वयं में बहुत सार्थक है जो सदियों से सोये दलित समाज को झकझोरता है और उसे जागने के लिए प्रेरित करता है।

मैं आशा करता हूँ कि श्री रामधन एडवोकेट की इस प्रथम कृति से दलित समाज लाभान्वित होगा और उसमें चेतना का संचार होगा। लेखक श्री रामधन को भी मैं बधाई देता हूँ कि उन्होंने अपने व्यस्ततम सरकारी सेवा कार्यक्रमों से थोड़ा-थोड़ा समय निकालकर दलित समाज को ऐसी प्रेरणाप्रद कृति दी है।

**डा. सोहनपाल सुमनाक्षर**
*राष्ट्रीय अध्यक्ष*
**भारतीय दलित साहित्य अकादमी**

बुद्ध पूर्णिमा
7 मई, 2001

# अनुक्रम


| क्रमांक | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1. | कब तक? | 5 |
| 2. | भाग्य | 6 |
| 3. | बाबा साहब की पीड़ा | 7 |
| 4. | बाबा साहब और नारी | 9 |
| 5. | दलितों का भविष्य | 10 |
| 6. | अन्धविश्वास-रूढ़िवाद | 11 |
| 7. | शिक्षा | 12 |
| 8. | भोजन | 14 |
| 9. | नशाखोरी | 15 |
| 10. | सुख-शांति | 16 |
| 11. | हत्या और बलात्कार | 17 |
| 12. | राष्ट्रपति जी की चिंता | 18 |
| 13. | संविधान की समीक्षा | 19 |
| 14. | दो बातें | 21 |
| 15. | बाबा साहब के मूल मंत्र | 23 |
| 16. | छल-कपट से भरा—हिन्दू समाज | 25 |
| 17. | दलित विरासत | 28 |
| 18. | दोहरी मानसिकता | 29 |
| 19. | युग बदलेगा | 31 |
| 20. | अब तो जागो | 32 |
| 21. | बाबा ने कहा था | 32 |


## कब तक?

हम सभी अब तक यह सुनते, पढ़ते और सिनेमा के पर्दे पर भी देखते आये हैं कि किसी राक्षस की जान किसी एक तोते या मैना में होती थी। और इसके बाद किसी साहसी युवक द्वारा उस तोते या मैना का वध होता था। और इसके साथ ही होती थी राक्षस की मौत।

लेकिन आज के युग में वैसे राक्षस तो मौजूद नहीं है। हां, मनुष्य भेष में मानवता और समाज के शत्रुओं की कमी नहीं है। मोटे तौर पर शत्रु भी दो प्रकार के होते हैं—एक तो अन्दुरूनी और दूसरे बाहरी।

जहां तक अन्दुरूनी दुश्मन की बात है हमें यह मानने में जरा भी संकोच नहीं करना चाहिए कि सबसे पहले तो हम अपने आप ही खुद के सबसे बड़े दुश्मन हैं। और खुद का खुद ही दुश्मन होना तो बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण है। यह ऐसी स्थिति है जिसमें खुद को खुद से ही दो-दो हाथ होना पड़ता है। बाहरी दुश्मन की तो पहचान भी हो जाती है। बाहरी दुश्मन से किसी भी व्यक्ति का सतर्क रहना एक स्वाभाविक क्रिया माना जायेगा।

अन्दुरूनी दुश्मन की स्थिति बिल्कुल वैसी ही होती है जैसे नदी में बहता हुआ एक काला रीछ। उस काले रीछ को काला कम्बल समझ कर किसी व्यक्ति ने उस कम्बल को पकड़ने के लिए नदी में छलांग लगा दी। वह व्यक्ति जब उस काली आकृति के निकट पहुंचता है तो वह काली आकृति, जो कि वास्तव में काला रीछ होता है, उस व्यक्ति को कस कर पकड़ लेता है। वह व्यक्ति लाख कोशिश करने के बाद भी उस काले रीछ की पकड़ से नहीं बच पाता। तब एक अन्य व्यक्ति ने, जो यह सारा तमाशा नदी के किनारे खड़ा हुआ देख रहा था, नदी में छलांग लगाने वाले व्यक्ति से कहा—"भाई, कम्बल लेकर जल्दी से नदी से बाहर क्यों नहीं आते?" तब उस व्यक्ति ने बड़ी ही मायूसी सी दिखाते हुए कहा "भाई, मैं तो इस कम्बल को छोड़कर इसके बगैर भी नदी से बाहर आना चाहता हूं। लेकिन यह कमबख्त कम्बल ही है जो मुझे नहीं छोड़ रहा है।"

कुछ ऐसी ही हालत हमारे दलित भाइयों ने भी बना रखी है अपनी। जितनी भी ऐसी चीजें या बातें हैं जो हम दलितों की उन्नति और विकास में बाधक और घातक हैं, उनको वे छोड़ना ही नहीं चाहते हैं बल्कि उन्हें और भी मजबूती से पकड़ कर बैठे हैं कि कहीं यह छूट न जायें, या कहीं मेरा नम्बर कट ही न जाये। मैं यह बात बिल्कुल भी मानने को तैयार नहीं हूँ कि हम लोगों में इतनी समझ नहीं है कि अच्छे बुरे की पहचान न कर सकें। जब कोई दलित व्यक्ति अपनी कर्मठता,

योग्यता, साहस और सच्ची लगन से जिन्दगी में कुछ सुधार कर लेता है तो ये ही वे नासमझ लोग हैं जो उस भले आदमी की टांग पकड़ कर नीचे खींचने में कभी भी पीछे नही रहते। यह जीवन की कड़वी वास्तविकता है। लेकिन इसके बावजूद मैंने जितना दलित समाज को करीब से देखा है, इसके बावजूद यह महसूस किया है कि अभी भी हमारे समाज के अधिकतर लोगों को इतनी समझ नहीं आई कि वे अपनी बुरी आदतों या यूं कहिए कि अपनी बुराइयों से पीछा छुड़ा सकें।

## भाग्य

अक्सर बहुत से लोग यह कहते नहीं थकते कि भाग्य तो भगवान की ही देन है। और जो कुछ होता है वह तो भगवान की मर्जी से ही होता है। किसी के भाग्य में सुख लिख दिया तो किसी के भाग्य में दु:ख। थोड़ी देर के लिए अगर यह मान भी लें तो भी भगवान ने यह तो नहीं लिख दिया या कहा कि किसी दुखी इंसान का दु:ख मत बांटों या किसी के जख्म या चोट पर मरहम पट्टी मत करो या किसी बीमार को दवा गोली ही मत दो या उसकी देखभाल या दवा-दारू ही न करो। ऐसे तो इन्सान की दु:ख या बीमारी तो कभी कम नहीं होगी, उल्टे दु:ख तो बढ़ेगा और बीमार भी अच्छा नहीं होगा।

इसलिये कभी भी अपने आप को दीन-हीन या दुर्भाग्यशाली मत मानिये। जरूरत है अपने आपको पहचानने की, अपने अन्दर छुपी हुई ऊर्जा शक्ति को इकट्ठा करने की, अपने पुरुषार्थ को केंद्रित करने की। जरूरत है सच्ची लगन और ठोस इच्छा शक्ति की इससे आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे।

सारी दुनिया में ऐसा कोई समाज नहीं है जिसमें किसी भी प्रकार की कमियां न हों, जिस पर कठिनाइयां या दुख तकलीफें न आई हों। इसी प्रकार इस दुनिया में कोई ऐसी समस्या भी नहीं है जिसका कोई हल न हो, या जो सुलझाई न जा सकें। अगर आप ऐसा नजरिया और ऐसी सोच रखते हैं तो समाज के प्रति आपकी इससे अच्छी सेवा की शुरुआत हो ही नहीं सकती। जरूरत है तो सिर्फ इस बात की कि आप अपने में एक सच्ची लगन और थोड़ी सी हिम्मत पैदा करें। बाबा साहब ने हम दलितों को केवल भाग्य के सहारे नहीं छोड़ा, बल्कि हमें सही अर्थों में कर्मवादी बनने का रास्ता दिखाया है।

इसके विपरीत हिन्दू मान्यता के अनुसार सभी हिन्दुओं को ऐसा यकीन और विश्वास दिलाया गया है कि जब-जब भी हिन्दू समाज और इस देश पर दु:ख तकलीफें या कठिनाइयां आयेंगी, ऐसी दशा में हिन्दू अवतार प्रकट होंगे और सभी



दु:ख, तकलीफों, मुसीबतों और कठिनाइयों को चुटकी बजाते ही दूर कर देंगे। कहने की जरूरत नहीं कि जब-जब भी इस देश पर कठिनाइयों के बादल छाये या बाहरी मुल्कों ने बारम्बार हमले किये, इस देश का भविष्य चरमराने लगा, विदेशी लुटेरों ने इस देश की अपार सम्पत्ति को लूटा, औरतों की अस्मतों को लूटा, बेगुनाह लोगों की हत्यायें की। उन हमलावरों का मुकाबला करने की बजाय, मंदिरों में घंटियां बजनी शुरू हो जाती और किसी अवतार के स्वर्ग लोक से पृथ्वी लोक पर उतरने की उम्मीद में आकाश की तरफ टक टकी लग जाती। लेकिन हमलावर आये, लूटमार की, कितने ही और भी संगीन जुर्म किये जो आज इतिहास के पन्ने बन कर रह गये हैं। लेकिन कोई अवतार इन विपत्तियों से बचाने नहीं आया। इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि इस देश ने कभी भी गल्तियों से सीखना नहीं चाहा। ऐसे देश दुख का सबब बनते हैं।

## बाबा साहब की पीड़ा

बाबा साहब ने जब से होश संभाला उन्हें तभी से ही तमाम शोषितों, पिछड़ों, पीड़ितों, गरीबों की दु:ख तकलीफों का आभास होने लगा था। जैसे-जैसे बाबा साहब बड़े हुये उन्होंनें स्वयं इन दु:ख तकलीफों, मुसीबतों को न केवल देखा समझा और सोचा बल्कि खुद इन दु:ख तकलीफों की पीड़ा को सहा भी। इसलिये उन्होंने इन दुख, तकलीफों, मुसीबतों का अंत करने के लिए प्रण कर लिया। इसे पूरा करने के लिए उन्होंने कठोर परिश्रम किया और दिन रात एक कर दिया। इसे हम यूं भी कह सकते हैं कि वास्तव में बाबा साहब का जन्म इस भारत भूमि पर सिर्फ इसी काम के लिए ही हुआ था। बाबा साहब की सोच व उनके उत्पीड़न का आंकलन हम महात्मा बुद्ध की बाल्यावस्था की सोच और उनके मन की पीड़ा से कर सकते हैं। यह आंकलन इसलिये भी सही साबित होता है कि आगे चलकर स्वयं बाबा साहब न केवल बुद्ध धर्म, उनके सिद्धांत और दर्शन से ही सबसे ज्यादा प्रभावित हुये बल्कि उन्होंने बुद्ध धर्म को स्वयं अपनाया और अपने असंख्य अनुयायियों को भी बुद्ध धर्म ग्रहण करवाया।

आज के समय में अगर दलितों, शोषितों, पीड़ितों, पिछड़ों, गरीबों की दशा में जो कुछ भी सुधार व बदलाव देखने को मिल रहा है, वह सब बाबा साहब की बेशुमार कुर्बानियों का ही परिणाम है। यह सब बाबा साहब के दिखाये हुये दर्शन का ही चमत्कार है कि दलित, शोषित, पीड़ित, गरीब आज घुटन भरी जिंदगी से कुछ उभर पाये हैं और खुली हवा में सांस ले पा रहे हैं। लेकिन हमें यह कभी भी

नहीं भूलना चाहिये कि इन सब बातों के लिए, बाबा साहब को कई-कई बार अपने विरोधियों के हाथों अपमानित होना पड़ा और उन पर तरह-तरह के आरोप लगे। यहां तक कि उन्हें देश द्रोही भी कहा गया। हिन्दू समाज और उनके कट्टर नेताओं की नजर में बाबा साहब किसी दुश्मन से कम नहीं थे। सब कुछ सहते हुए बाबा साहब दृढ़ता से डटे रहे। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और न ही धमकियों और दबाव के आगे झुके। ऐसा क्यों हुआ? चूंकि उनका रास्ता सच्चाई का रास्ता थी या उनकी लड़ाई नैतिकता और इन्सानी रिश्तों की लड़ाई थी। इन्सानियत को इज्जत दिलाने और उसको जिन्दा रखने की लड़ाई थी। उनकी लड़ाई स्वाभिमान की लड़ाई थी। यह स्वाभिमान की लड़ाई आज भी जारी है। इसलिए आखिर में बाबा साहब कामयाब हुये। इससे आलोचकों और विरोधियों को निराशा ही हाथ लगी और मुंह की खानी पड़ी।

लेकिन कुछ होने के बावजूद अभी बहुत कुछ हासिल करना बाकी है। सफर बहुत लम्बा है, मंजिल अभी दूर है। इसको हम यूं भी कह सकते हैं कि अभी तो यह अंगड़ाई है, आगे और लड़ाई है। अभी तो अच्छे तरीके से शुरुआत भी नहीं हो पाई है। आज हम जिस मुकाम पर पहुंचे हैं उसी से हमें संतुष्ट होकर नहीं बैठ जाना है। अभी तो बहुत कुछ करना बाकी है।

बाबा साहब ने एक बात स्पष्ट रूप से साबित कर दी थी कि सभी इंसान बराबर हैं, कोई छोटा या बड़ा नहीं है। हर इंसान को सम्मान से जीने का बुनियादी हक है चाहे वह कितना ही गरीब ही क्यों न हो, उसके इस हक को कोई भी नहीं छीन सकता। एक गरीब से गरीब इंसान भी अपनी स्थिति अनुसार कुछ भावनायें रखता है। दलित मेहनत मजदूरी करता है। खून पसीना एक करके वह अपने परिवार के लिए दाल-रोटी जुटाता है। हकीकत तो यह है कि दो वक्त की रोटी-दाल के इंतजाम से आगे की उसकी सोच ही नहीं है। हां, समाज में आये कुछ बदलाव के साथ उसकी यह तमन्ना तो जरूर जागी है कि अब इज्जत व सम्मान से जिया जाये। उसकी इज्जत व सम्मान को कोई ठेस न पहुंचाये। आज वह इतना तो समझ गया है कि जितनी मेहनत वह करता है उससे ज्यादा, नहीं तो कम से कम उसकी जायज मजदूरी तो उसे मिले। आज वह यह भी सोचता है कि वह खुद तो मेहनत मजदूरी करके जैसे तैसे अपनी रही सही जिन्दगी पूरी कर लेगा, लेकिन उसका बच्चा तो कुछ पढ़ लिख कर समाज में अपना कुछ स्थान बना ले।

अभी भी तथाकथित सवर्णों को जो अपने आप को परमात्मा की संतान कहते



हैं, यह सब कहां पसंद है? समाज में भेदभाव, जात-पात, असमानता, छोटे-बड़े की मनस्थिति व भावना आज भी मौजूद है। ये भेद कहां मिटे? किसी न किसी रूप में और हर जगह, ये सामाजिक बुराइयों आज भी मौजूद हैं। यही सोच और भावना इस देश की गुलामी और पिछड़ेपन का मुख्य कारण रही हैं।

हम समाज के चाहे किसी भी वर्ग से आते हों लेकिन हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि मेहनतकश इंसान ही इस देश की नींव ही नहीं, बल्कि रीढ़ की हड्डी भी है जिस पर सारे देश का विकास, उन्नति और मजबूती टिकी है। बिना मेहनतकश इंसान के सहयोग के इस देश में कोई भी निर्माण कार्य पूरा नहीं हो सकता। इसलिये जहां-जहां भी और जब-जब भी इस मेहनतकश इंसान की उपेक्षा होगी, देश का न तो समुचित और चहुंमुखी निर्माण हो पायेगा और न ही कोई भी अन्य विकास के कार्य पूरे हो पायेंगे। सद्भावना और सहयोग के बिना यह देश फिर दासता और गुलामी की तरफ बढ़ता जायेगा। काश! अगर इन मेहनतकश इंसानों को शिक्षा और समानता का अधिकार मिला होता तो देश पर कभी भी मुगलों या अंग्रेजों का शासन नहीं होता।

## बाबा साहब और नारी

बाबा साहब जैसी विश्व विख्यात हस्ती के साथ इंसाफ नहीं होगा अगर कोई यह कहे कि बाबा साहब की सोच तो केवल गरीबों और दलितों तक ही सीमित थी। बाबा साहब का चिंतन केवल जाति या वर्ग विशेष के लिए कभी भी नहीं था। गरीबों, पिछड़ों, दलितों के अलावा नारी जाति को समान अधिकार दिलाने पर उन्होंने विशेष जोर दिया और भरपूर संघर्ष किया। नारी भी शोषित वर्ग थी। उसका भी हर समय घर परिवार और समाज ने शोषण ही किया। नारी समस्या पर बाबा साहब बहुत चिंतित रहते थे। उन्होंने नारियों को अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने के लिए कहा।

नारी को पिता की संपत्ति में आज जो बराबर का अधिकार मिला है, वह बाबा साहब की ही सोच व संघर्ष का सुखद परिणाम है। उन्हीं की दिखाई हुई रोशनी का ही चमत्कार है कि आज की नारी सभी दिशाओं में, सभी क्षेत्रों में, बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। समाज को बनाने संवारने और विकास में आज की नारी पूर्ण रूप से भागीदार रही है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि नारी के सहयोग के बिना या नारी का अपमान करके न तो कोई घर परिवार ही उठ पाया है, न कोई समाज ऊंचा उठा है और न ही देश में तरक्की हो सकती है।

# दलितों का भविष्य

मैं जब दूसरी कक्षा में पढ़ता था तो मेरे पाठ्यक्रम में एक कविता भी थी। उस कविता ने मेरे तमाम जीवन को बहुत ही प्रभावित किया। आप यूं भी कह सकते हैं कि वह कविता ही मेरी जिंदगी का आधार बन गई। उस कविता के मुख्य अंश कुछ इस प्रकार हैं :

उठो बढ़ो कुछ काम करो,
सब कुछ कर सकते हो तुम
मत ईश्वर को बदनाम करो।
देखो नहीं हाथ की रेखा,
उल्टो मत पतरा थोथी,
मीन मेष कुछ कर न सकेंगे,
ये सारी बातें थो-थी।
इसलिये उठो बढ़ो कुछ काम करो
सब कुछ कर सकते हो तुम
मत ईश्वर को बदनाम करो।

मेरा यह मानना है कि दलित अपने हाथ की लकीरें स्वयं बनाता है और स्वयं ही मिटाता भी है। लकीरें बनाता तो ऐसे है कि उसकी मेहनत ही उसकी सबसे बड़ी पूंजी है, सबसे बड़ी ताकत है। अपनी मेहनत के बल से वह बड़ा से बड़ा और मुश्किल काम कर सकता है। किसी भी काम से जी नहीं चुराता। और वह किसी से कम नहीं। लेकिन इसके साथ-साथ ही इस दलित गरीब में एक बहुत बड़ा दोष भी है। अपने इस दोष की वजह से वह अपनी भाग्य की रेखा को मिटा डालता है। वह मेहनत करके कमाना तो जानता है, लेकिन खाना नहीं जानता। वह नहीं जानता कि उस मेहनत की कमाई को कैसे सही तरीके से खर्च करे, उस कमाई का कैसे सदुपयोग करे या किस अच्छे ढंग से खर्च करे कि उसका घर परिवार ज्यादा सुखी सम्पन्न हो, ज्यादा खुशहाल हो। वह खून पसीने की गाढ़ी कमाई को बुरी संगत में बैठकर और बहुत ही गलत कामों में व्यर्थ गंवा देता है और सुबह होते ही फिर फक्कड़ का फक्कड़।

दूसरी बात यह है कि वह समय की कद्र भी नहीं करता। समय जो कि बहुत ही कीमती है, उसको भी वह व्यर्थ गंवा देता है। पूरे दिन में बहुत समय तो वह फिजूल में ही गंवा देता है जिससे उसको कुछ हासिल ही नहीं होता। यह भी एक गरीब दलित की बहुत बड़ी कमजोरी है जो जितनी जल्दी दूर हो जाये उतनी ही



उसके लिये फायदे की बात है।

समय की बर्बादी के साथ-साथ एक सामाजिक बुराई का एक और उदाहरण देता हूँ। मान लो चार आदमी हैं और चारों की अपनी-अपनी जेबों में पूरे सौ-सौ रूपये भी हैं। सभी चारों लोगों के कुल रूपये हुए चार सौ। अब वो चारों जुआ खेलने बैठ जाते हैं कि कैसे किसी की जेब खाली की जाये। दाव-पेंच लगते हैं, बाजियां लगती हैं और चक्र शुरू हो जाता है कि कभी किसी एक की जेब से पैसे दूसरे के पास गये, दूसरे के हाथ से तीसरे के पास और फिर बारी-बारी से कभी किसी के पास पहुंच गये तो कभी किसी के पास। अब हम मान लें कि कभी पैसे इधर तो कभी उधर का सिलसिला कम से कम चार या पांच घंटे तक भी चल सकता है कोई भी पूरी तरह न तो हारा और न ही कोई पूरी तरह से जीता। लेकिन इतना जरूर है कि चारों लोग घंटों तक लठम लठा होते रहे फिर भी वे रूपये जितने थे यानि चार सौ वे उतने ही रहे, न कम हुये और न ही ज्यादा। क्योंकि वहां सवाल उन चार सौ रुपयों को बढ़ाने का नहीं था। अगर कोई सवाल था तो वह यह था कि एक भाई द्वारा दूसरे भाई की जेब कितनी चालाकी से और कैसे काटे? और ऐसी सूरत में उन पैसों के बढ़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता। वे जिसके पास भी जाते चार सौ ही रहते।

यहां ये सब बातें कहने का मतलब यह हुआ कि चारों लोगों के पास सौ-सौ रूपये तो पहले से ही अपने-अपने थे। अगर वे सभी लोग आपस में जुआ खेलने में चार पांच घंटे बर्बाद करने की बजाए सभी अपनी-अपनी मेहनत मजदूरी करते तो उन चार पांच घंटों में हर एक कम से कम सौ-सौ रूपया और कमा लेता और उनके अपने रूपये सौ-सौ की बजाए दो सौ होते। इन सब बातों का कारण है गरीबी और अशिक्षा, जिनको हमें दूर करना है।

बाबा साहब ने हमें भाग्यवादी न बनाकर कर्मवादी बनने पर सारा जोर दिया। किसी भी कर्मवादी के जीवन में सफलता और कामयाबी के मूलमंत्र है:

1. काम में सच्ची लगन
2. अपने सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास
3. जिन्दगी और समय की कद्र

# अन्धविश्वास-रूढ़िवाद

हर इंसान एक सामाजिक प्राणी है और कोई भी इंसान समाज से ज्यादा वक्त दूर नहीं रह सकता। इसलिये प्रत्येक इंसान को समाज की जरूरत है। साथ ही समाज का बंधन टिका है आपसी भाईचारे और मधुर संबंध पर जो समाज की

जड़ों को और भी मजबूत करता है। साथ ही साथ हमें यह भी देखना है कि किसी समाज के लोगों की सोच कैसी है। उस समाज के लोगों के आचार विचार कैसे हैं? वे मानव कल्याण और इन्सानियत को कितना मानते और समझते हैं? उनकी सोच और भावना कहीं अंधविश्वास या रूढ़िवादिता से तो प्रेरित नहीं है? और जहां रूढ़िवादिता और अंधविश्वास होता है, वहां असंतोष बढ़ता है। कटुता आती है, मनमुटाव बढ़ते हैं। तरह-तरह की भ्रान्तियां पैदा होती हैं। अलगाववाद को बढ़ावा मिलता है। अब यही सब कुछ इस देश में देखने को मिल रहा है। अंधविश्वास और रूढ़िवाद का चलन या पनपना चाहे वह किसी भी पंथ, धर्म या समुदाय में हो, देश व विश्वशांति के लिए खतरा ही है।

इसलिये समय रहते अंधविश्वास और रूढ़िवाद को छोड़ना होगा। कटुता व मनमुटाव स्वयं खत्म हो जायेंगे। हर मानव को दूसरे मानव का आदर व सम्मान करना होगा। किसी भी आस्था मानने वालों को दूसरों की आस्था व भावनाओं का सम्मान करना होगा। किसी को किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का कोई हक नहीं है। हर मानव को अपनी बात कहने का अधिकार है। लेकिन किसी की भावनाओं को कष्ट या आहत करने का अधिकार किसी ने किसी को नहीं दिया है। हर मानव की अपनी भावनायें होती हैं। अपनी स्वतंत्र सोच होती है। वह किसी का मोहताज नहीं है।

## शिक्षा

सभी जानते हैं कि हजारों सालों से शिक्षा पाने और शिक्षा देने का अधिकार केवल चंद लोगों को ही मिला हुआ था। समाज की बहुत बड़ी संख्या को शिक्षा प्राप्त करना अपराध था। शिक्षा पाना तो दूर की बात, दलित समाज का कोई इंसान अगर अच्छी बात कह दे या सुन ले तो भी अपराध था और जिसकी सजा भी बहुत ही अमानवीय व भयंकर थी। अगर वह अच्छी बात सुन ले तो उसके कानों में शीशा पिंघला कर डाल दिया और अगर भूल से वह अच्छी बात कह दे तो उसकी जबान ही काट दी जाती थी। कैसी भयंकर स्थिति रही होगी उन दिनों दलित, शोषित, पिछड़ों की, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इसे सोचकर आज भी दिल कांपने लगता है। ऐसा अमानवीय व्यवहार करने वाले लोग आज भी शर्मिंदा नहीं हैं। ऐसे कुकर्मों के बाद भी वे अपने को उत्तम इंसान कहलाने का ढोंग करते हैं।

शिक्षा के मामले में आज भी सरकारों का योगदान नकारात्मक है। शिक्षा के मामले में पूरी तरह से भेदभाव किया जा रहा है। होना तो यह चाहिए कि देश के



सभी बच्चों को एक जैसी शिक्षा मिले। सभी स्कूलों और कालेजों में शिक्षा का पाठ्यक्रम एक जैसा हो। किसी भी स्तर पर कोई फर्क नहीं होना चाहिये लेकिन वास्तव में सरकार की शिक्षा पद्धति उल्टी किस्म की है। कहने को तो सरकारें लोकतंत्र और गणतंत्र होने का दम भरती हैं और समानता की बात भी कहती हैं। लेकिन असल में सरकार चाहती ही नहीं कि गरीबों, दलितों, पीड़ितों और पिछड़ों के बच्चों को उच्च शिक्षा पाने का मौका दिया जाये। क्योंकि सरकार जानती है और समझती भी है कि उच्च और अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के बाद ये लोग सवर्णों के हाथों की कठपुतली बन कर नहीं रहेंगे। अभी तक दलितों, गरीबों, शोषितों, पिछड़ों ने अपनी मेहनत और लगन से जितनी शिक्षा प्राप्त कर ली है और अपने अधिकारों की बात करने लगे हैं, उसी से समस्त सवर्ण समाज हैरान है, भयभीत है और उसे डर है कि जब आजादी के 54 सालों में इन लोगों में इतना साहस, मजबूती और हौसला आ गया है तो कुछ सालों के बाद तो ये लोग बिल्कुल ही बेकाबू हो जायेंगे। यही सोच है जो आज के सवर्णों को परेशान किये हुए है। उनकी रातों की नींद और दिन का चैन खत्म हो गया है। इसलिए वे हर रोज नये-नये अडंगे, नई-नई रूकावटें, नई-नई तरकीबे पैदा करने में लगे हैं दलितों, शोषितों, गरीबों, पीड़ितों के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए, लेकिन हमारे मजबूत इरादे और बुलंद हौंसले सवर्णों के इन काले और नापाक इरादों को कभी भी सफल नहीं होने देंगे।

शिक्षा के निजीकरण हो जाने से गरीब, दलित अपने बच्चों को अच्छी और उच्च शिक्षा दे पाने में असमर्थ सा महसूस कर रहा है। बदलते पाठ्यक्रम के साथ शिक्षा दिन ब दिन बहुत ही महंगी होती जा रही है। ऐसी हालत में लड़की को शिक्षा दिलाना तो दूर गरीब, दलित अपने लड़के को भी अच्छी और उच्च शिक्षा दिलाने में कठिनाई महसूस कर रहा है। जहां तक सरकारी स्कूलों और कालेजों के शिक्षा के स्तर की बात है वह दिन ब दिन गिरता ही चला जा रहा है। सरकारी स्कूलों और कालेजों में पढ़कर तो किसी गरीब, दलित के बच्चे का अफसर का पद पा लेना तो दिन में सपने देखने जैसा कार्य होगा। हां, इतना तो जरूर कह सकते हैं कि एक सरकारी स्कूल में पढ़कर उसका बच्चा एक चपड़ासी बन जायेगा। अगर गिर पड़कर कालेज पास कर लिया तो एक क्लर्क लगने की उम्मीद कर सकता है परंतु इन दोनों पदों को भी अब पा लेना इतना आसान नहीं है। इनको भी पाने के लिए बड़े-बड़े पापड़ बेलने पड़ते हैं।

इसलिये यह अति आवश्यक है कि सरकार शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार

करे, देश के सभी बच्चों के लिये एक समान शिक्षा उपलब्ध कराये। उसमें किसी भी स्तर पर कोई असमानता नहीं होनी चाहिये। तभी देश, एक जुट, अखंड व शक्तिशाली बन पायेगा। सिर्फ कुछ मुट्ठी भर लोगों के हितों को ध्यान में रखकर यह काम होने वाला नहीं है। साथ ही शिक्षा के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों को अनिवार्य कर दिया जाये :

1. Physical Education (स्वास्थ्य शिक्षा)
2. Social Values Education (सामाजिक मूल्यक शिक्षा)
3. Mental Education (मानसिक शिक्षा)
4. Spiritual Education (आध्यात्मिक शिक्षा)
5. Moral Building Education (चरित्र निर्माण शिक्षा)

इन शिक्षाओं को पाकर प्रत्येक प्राणी स्वयं का, समाज का और देश का सही दिशा में नेतृत्व कर सकेगा, विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा। शिक्षा के दूसरे क्षेत्रों में उपलब्धियां पाने के साथ-साथ इन पांच तत्त्व ज्ञानों की वैसे भी जिन्दगी में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

अच्छी और उच्च शिक्षा की सभी को आवश्यकता है। उदाहरण के तौर पर किसी भी एक बड़े पर अनपढ़ नेता या ऐसे ही किसी एक मंत्री की बात ले लें। ये लोग दिन रात यह कहते हुये नहीं थकते कि हिन्दी सभी पढ़ें और पढ़ायें। यह हमारे देश की राष्ट्र भाषा है। लेकिन ऐसे नेताओं और मंत्रियों के बच्चों पर नजर डालें तो पता चलेगा कि सभी बड़े-बड़े अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ते हैं। बाप ने चाहे स्कूल का मुंह तक न ही देखा हो लेकिन उनके बच्चे तो अंग्रेजी स्कूल में पढ़ रहे हैं। मतलब यह कि सभी अपने बच्चों को अच्छी और उच्च शिक्षा दिलाना चाहते हैं। जब सभी ऐसा सोचते हैं तो मैं समझता हूं कि हमारे दलित समाज के लोगों को भी इस दिशा में गम्भीरता से सोचना चाहिए। यह हर इंसान का नैतिक कर्तव्य है कि वह चाहे अपने बच्चों के लिए धन-दौलत, मकान, जायदाद छोड़े या न छोड़े लेकिन समय रहते उन्हें अच्छी शिक्षा जरूर दिलवाये। ऐसे बच्चे आज्ञाकारी बनने के साथ-साथ देश-निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल होंगे।

## भोजन

जैसे जिन्दा रहने के लिये सांस लेना और नाड़ी की गति का बराबर चलते रहना जरूरी है वैसे ही जल और भोजन भी जीवन के अभिन्न अंग हैं। बिना भोजन खाये



और बिना जल पीये किसी भी इंसान का ज्यादा देर तक जिन्दा रह पाना नामुमकिन है। खाना भी पौष्टिक होना बहुत जरूरी है। खाना अगर चटपटा और स्वादिष्ट हो, और खासकर मुफ्त का हो जो केवल शादी ब्याहों या बड़ी पार्टियों में ही मिलता है, तो कोई इंसान ऐसा खाना जरूरत से ज्यादा खाये बिना नहीं रह सकता। सभी डट कर खूब खाते हैं। लेकिन ऐसा करते वक्त वे भूल जाते हैं कि खाना पराया सही, पर पेट तो अपना है। इसलिये खाने की मात्रा का नाप तौल, हिसाब-किताब भी रखना बहुत ही जरूरी है क्योंकि अभी थोड़ा सा कम खा लेंगे तो शरीर को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला बल्कि पेट आराम में रहेगा। परन्तु अगर थोड़ा सा भी जरूरत से ज्यादा खा लिया तो पेट गड़बड़ा जायेगा। फिर इलाज के लिए डाक्टर के पास जाना होगा।

इसलिये जब किसी अच्छे भले इंसान को उसकी पसंद का थोड़ा सा भी ज्यादा खाया हुआ खाना नुकसान पहुंचा सकता है तो आप खुद ही सोच लें कि शराब रूपी जहर किसी इंसान को कैसे ठीक व स्वस्थ रख सकता है? शराब तो शरीर और पेट के साथ उस इंसान की आत्मा तक को नष्ट कर देती है। पाप की ओर धकेलती है। इंसान में इंसान का रूप न होकर एक शैतान का रूप नजर आता है। यह तो कुछ अच्छा सोचने या करने का मौका ही नहीं देती। वैसे तो आंधी तूफान भी आते हैं सब कुछ बर्बाद कर देते हैं। पर कभी-कभी। पर शराब का जहर तो इंसान को तिल-तिल करके मारता है, हर घड़ी मारता है। बाप और दादा को अपने जवान शराबी बेटों, पोतों की लाशों को अपने कंधों पर उठाते हुये हम सभी अक्सर देखते हैं। इससे कठिन बुरा वक्त क्या हो सकता है उस घर के लिए। इसलिये जरूरी शराब नहीं, रोटी है और वह भी सुख की, मेहनत की।

## नशाखोरी

किसी भी शराब की दुकान को मोटे तौर पर हम कह सकते हैं कि एक सरकारी लाईसेंस धारी लुटेरे की दुकान, और ऐसे लुटेरे की जिसकी प्रशासन भी मदद व हिफाजत करता है। एक इंसान की सारे दिन की खून पसीने की कमाई को कुछ ही मिनटों में लाईन लगवाकर लूट लेते हैं। घर में मां-बाप, पत्नी और बच्चे इंतजार करते रहते हैं कि उनका कमेरा आयेगा, खाने का इंतजाम होगा, घर का चूल्हा जलेगा और पेट की आग बुझेगी। लेकिन होता इसके उल्टा ही है। आप खुद अंदाजा लगा सकते हैं। पेट की आग, भूख मिटाने की बजाये, कलेजे में आग लगने लगती है सभी घरवालों के। कब तक चलेगा यह सब? ऐसे लोगों के लिए हम दुआ ही कर सकते हैं। और इतना भी जरूर कहेंगे कि शराब तो अमीरों का

शौक है। इन अमीरों को ही इसमें डूबा रहने दीजिये। हम अभी इतने अमीर नहीं हुये हैं कि ऐसा शौक पाल लें।

शराब से दूर की ही नमस्ते कर ली जाये, वही अच्छा है। यह किसी की दोस्त नहीं। किसी को भी नहीं छोड़ेगी। हां, बर्बाद करके तो शायद पीछा छोड़ दे और बर्बादी के बाद क्या बचता है आप खुद ही सोच लें? इसके अलावा नशाखोरी, चाहे बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, गांजा, सुलफा, किसी तरह की हो तन-मन का नशा करती है और धन की बर्बादी करती है।

## सुख-शांति

सुख-शांति और खुशहाली से सभी जीवन जीना चाहते हैं। संसार में कोई भी नहीं चाहता कि वे दुखों के साये में जिये। लेकिन सिर्फ सुख-शांति से जीने की इच्छा या कामना करने से काम चलने वाला नहीं। उसके अनुरूप कुछ कार्य भी करने होते हैं।

बेहतर जिंदगी केवल अच्छे ज्ञान से ही संभव है और यह ज्ञान भी एक अजीब चीज है। जैसे अंधेरे से रोशनी की तरफ बढ़ने को हम ज्ञान प्राप्ति की पहली शुरुआत कह सकते हैं। अच्छा ज्ञान अच्छी संगत के साथ-साथ पढ़ाई-लिखाई यानि शिक्षा से बढ़ता है। मेरा यह मानना है कि दुनिया भर की समस्याओं के लिए सिर्फ एक ही जवाब है—शिक्षा। केवल शिक्षा से ही सबसे पहले एक इंसान में आत्मविश्वास पैदा होता है जो विकास के लिए बहुत ही जरूरी है। आत्मविश्वास के साथ हौसला भी बढ़ता है और हिम्मत भी आती है। फिर इच्छा होती है कुछ कर दिखाने की। अच्छे-बुरे का ज्ञान होने के साथ ही आपके दिमाग से डर व संकोच अपने आप दूर हो जाते हैं।

शारीरिक ताकत कोई बुरी बात नहीं, अच्छी बात है। परन्तु शारीरिक ताकत कहीं-कहीं काम आ सकती है, हर जगह नहीं। लेकिन दिमाग की ताकत एक ऐसी ताकत है जो हर जगह काम आती है। दिमाग की ताकत से इंसान मुश्किल से मुश्किल समस्या का सामना कर सकता है। दिमाग की ताकत में समझदारी और होशियारी दोनों का समावेश होता है। इसलिए हम सभी को दिमाग की ताकत पर ज्यादा जोर देना चाहिये जो असली ताकत है।

आत्मबल, दृढ़निश्चय व मनोबल सुखमय और कल्याणकारी जीवन के लिए बहुत ही जरूरी है। अगर इतनी-सी बात समझ में आ गई तो फिर कोई समस्या ही नहीं। सिर्फ आगे ही बढ़ना होता है।



जहां भय नहीं है, वहीं प्रसन्नता है, और प्रसन्नता में ही पूरा जीवन है, विकास छिपा है। परन्तु यह भी सत्य है कि भय और प्रसन्नता दोनों कभी भी साथ-साथ नहीं चल सकते। भय से मुक्ति पाना ही जरूरी है।

रही डरने की बात, अगर डरना ही है तो हर उस काम से डरें जिससे दूसरे को पीड़ा होती है, तकलीफ होती है। कोई भी बुरा काम या गलत बात कल भी बुरी थी, आज भी बुरी है और कल भी बुरी होगी।

## हत्या और बलात्कार

आखिर कब तक खामोश व बेजुबान से बने हम देखते व सहते रहेंगे अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों को? हम निर्दोष हैं, यह सभी जानते हैं? और अगर हमारा कि कोई दोष है तो वह यह है कि हम किसी का न तो कुछ बिगाड़ सकते हैं और न ही हमारी ऐसी हालत है कि हम चाहकर भी किसी का कुछ भी नुक्सान कर दें। इससे भी बड़ी बात यह है कि हमारी किसी का कुछ बिगाड़ पाने या नुक्सान पहुंचाने की सोच ही नहीं है क्योंकि हम न केवल शांतिप्रिय और अहिंसावादी हैं बल्कि 'जियो और जीने दो' की नीति पर विश्वास रखते हैं। किसी के अधिकारों का हनन करना हमने सीखा ही नहीं है। हमारी सोच तो रचनात्मक और सकारात्मक रही है। नकारात्मक नहीं।

हमें यह भी जान लेना चाहिये कि मक्खी, मच्छर, कीड़े-मकोड़े वहीं पैदा होते हैं जहां गन्दगी होती है। वैसे जालिम व जुल्मी भी वहीं पैदा होते हैं जहां दब्बू व कमजोर रहते हैं। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि जालिमों की संख्या हमसे बहुत ही कम है। अगर हमारी इतना समझ में आ गया तो फिर किस बात का डर? एक बार यह डर निकला नहीं कि जुल्म और जालिम दोनों उल्टे पांव भागते नजर आयेंगे। किसी भी मुसीबत या डर से भागना अक्लमंदी नहीं है। हमेशा डरते रहने से अच्छा है कि खतरे व मुसीबत का एक बार सामना कर लिया जाये। इस पर किसी शायर ने ठीक ही कहा कहा है—

**हंसता खेलता चला जाता हूं**
**मौजे हवादिस से,**
**अगर आसानियां हों**
**जिन्दगी दुस्सवार हो जाये।**

ऐसे ही अगर ठोकर लगती है तो लग जाये कोई गम नहीं। ठोकर खाकर गिरना या लड़खड़ना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है ठोकर लगकर गिर

जाये और फिर हिम्मत से खड़े हो जायें और चल पड़ें अपनी मंजिल की तरफ। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि यह तो होते ही हैं सिर्फ पार करने के लिए। दुख, तकलीफ और ठोकर लगना तो इंसान के सबसे बड़े गुरू हैं। ये हमें सीखने, समझने और अच्छा व्यवहार करने का मौका देते हैं और यही जिंदगी का असली मकसद है।

## राष्ट्रपति जी की चिंता

यह देश का सौभाग्य ही कहा जायेगा कि इस देश को श्री के.आर. नारायणन के रूप में अति सुशिक्षित, होनहार और दूरदर्शिता से पूर्ण राष्ट्रपति मिले हुये हैं जो पिछले अन्य राष्ट्रपतियों से कई अर्थों में बिल्कुल ही भिन्न हैं। वे सदैव गरीबों, दलितों की दशा पर चिंतित रहते हैं। न केवल सरकार को बल्कि सारे देश को वक्त-वक्त पर सावधान करते रहते हैं। सही मार्गदर्शन करते हैं। उनका मानना है कि आर्थिक सुधारों का देश के गरीबों और दलितों तक पहुंचना बहुत जरूरी है। वे सरकार को चेतावनी भी देते रहते हैं कि अगर आर्थिक सुधारों का लाभ गरीबों तक नहीं पहुंचता तो गरीबों के धैर्य का बांध टूट जायेगा। ऐसी हालत में गरीब और दलित सरकार को कभी माफ नहीं करेगा।

राष्ट्रपति जी ने यह भी कहा है कि उदारीकरण और निजीकरण की नीति का लाभ उनको भी मिले जो अब तक सभी अधिकारों से वंचित रहे हैं जिससे वंचित लोगों को भी उदारीकरण और निजीकरण के लाभ के समान अवसर मिल सकें।

उन्होंने यह भी कहा कि गणतंत्र के 50 साल से भी अधिक पूरा होने के बाद भी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय का सपना इस देश के करोड़ों लोगों के लिए अब तक पूरा नहीं हो पाया है।

राष्ट्रपति जी ने यह भी महसूस किया कि इस देश के उच्च श्रेणी के लोगों को जल्दी ही थकान व कुव्वत होने लगती है जब दलित, शोषित और उपेक्षित लोगों के लिए संविधान द्वारा निर्देशित अच्छे और ठोस काम करने की बारी आती है। इसके लिए उन्होंने बहुत ही साफ शब्दों में चेतावनी देते हुये बाबा साहब डा. अंबेडकर द्वारा 25.11.1949 को संविधान सभा में कही गई इस बात की तरफ इशारा किया कि वे लोग जिनके हाथ में सत्ता है यह जान लें कि इस देश का लोकतंत्र गरीबों, दलितों, वंचितों का सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय व समान अधिकार दिये बिना, एक ऐसा महल है जो कूड़े के ढेर पर खड़ा है जिसको इस देश के पीड़ित, गरीब व वंचित जब भी जाग गये, खंडहर करके रख देंगे।



देश के मुट्ठी भर लोग तो शराब के नशे में चूर रहें जबकि बाकी लोगों को गंदा पानी पीकर गुजर करनी पड़ती है। सामाजिक व आर्थिक असमानता का एक और उदाहरण राष्ट्रपति जी ने यह कहकर दिया कि भारत के पास विश्व में सबसे ज्यादा तकनीकी विशेषज्ञ हैं तो साथ ही सबसे ज्यादा अनपढ़ भी हैं। बीच के दर्जे के भी सबसे ज्यादा लोग हैं, तो सबसे ज्यादा गरीब भी है। सबसे ज्यादा ऐसे बच्चे भी हैं जिनको शिक्षा नहीं मिलती, पौष्टिक आहार नहीं मिलता और जिनको गरीबी की वजह से बाल मजदूरी करनी पड़ती है।

राष्ट्रपति जी ने यह भी महसूस किया कि हमारी सोसायटी इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील नहीं जान पड़ती, और हमदर्द व सहानुभूतिपूर्ण रवैया भी नहीं रखती। इन्हीं सभी बातों का नतीजा धीरे-धीरे और शांत पनप रहे क्रोध का इधर-उधर हिंसक कार्यवाहियों में देखने को मिलता है जिसको हम आसानी से 'नक्सलवादी' नाम दे देते हैं। समाज के बेगुनाह गरीबों और दलितों पर दिन रात बिना बात अत्याचार करने वाले नक्सलवादियों से कहीं ज्यादा खतरनाक हैं जिन पर अकुंश लगना बहुत ही जरूरी है।

## संविधान की समीक्षा

कहने कि जरूरत नहीं कि भारत का संविधान संसार के किसी भी संविधान के मुकाबले कहीं ज्यादा अच्छा और जनकल्याणकारी है। इसमें वे सभी तत्व मौजूद हैं जिससे इस देश का शासन भली-भांति चलाया जा सकता है। यह लचीला भी है और साथ ही साथ इतना शक्तिशाली भी है कि देश की शांति और बाहरी युद्ध के समय सबको एकजुट रख सकता है। और अगर संविधान के तहत कुछ चीजें गलत कर दी जाती हैं तो इसका मतलब यह तो नहीं हो सकता कि हमने एक बुरा संविधान अपनाया बल्कि हमें यह कहना पड़ेगा कि इंसान ही निकम्मा है।

जो लोग संविधान की समीक्षा की बात करते हैं वे पहले यह तो देख और समझ लें कि क्या संविधान में लिखित सारी बातों पर अमल हो गया है? क्या यह देश और इसकी सरकारें ईमानदारी और अच्छाई से संविधान के अनुरूप कितना चल रही हैं और कितना चल पा रही हैं? साथ ही साथ यह भी देख और समझ लिया जाये कि समाज में जितनी बीमारियां, जितनी बुराइयां, जितनी खामियां हैं, क्या वे सब दूर हो गईं? क्या समाज से भेदभाव, ऊंच-नीच खत्म हो गया? और अगर नहीं तो सबसे पहले उन कारणों को तलाशा जाये जिसकी वजह से समाज में रोष है, भेदभाव है, इंसान-इंसान में भेद है। फिर इन समस्याओं को दूर करने के ठोस

इंतजाम किये जायें। ठोस व शक्तिशाली सामाजिक क्रांति का जज्बा पैदा किया जाये। यह सच है कि संविधान की धाराओं को अगर सही तरीके और पूरी ईमानदारी से लागू कर दिया जाये तो समाज की दिक्कतें काफी कम हो सकती हैं और फिर संविधान समीक्षा की जरूरत भी न पड़े। मगर संविधान समीक्षा की आड़ में लोगों के इरादे नेक नजर नहीं आते हैं। यह गरीब और दलित समाज के साथ विश्वासघात जैसा कार्य होगा, जो दोषी लोगों को शायद ही कभी माफ करे। संविधान समीक्षा की बात करने वाले पहले अपने अन्दर झांक कर देखें कि उनके मन कितने साफ हैं? आज की सामाजिक व्यवस्था से क्या वे संतुष्ट हैं? शायद संतुष्ट ही होंगे क्योंकि ऐसा वातावरण तो उन्हें राजनीतिक दुकान चलाने में सहायक होता है।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने दलित समाज की न केवल तकदीर (किस्मत) ही बदली बल्कि उनके अंधेरे घरों में रोशनी जगमगा दी। उनकी जिंदगी के मायने ही बदल दिये। जो लोग अपना अस्तित्व ही खो चुके थे उनको जीना सीखा दिया जैसे मुर्दे में प्राण फूंक दिये हों। दलितों का आज ही नहीं, कल भी सुधार दिया, जो अमिट है। अब यह केवल दलितों के हाथ में है कि वे इस देश की तकदीर बदल दें और एक नया इतिहास लिख दें क्योंकि इन दलितों के हाथों में ही असली ताकत व शक्ति है जो इस देश की व्यवस्था में परिवर्तन ला सकते हैं और इस देश को नई दिशा दे सकते हैं। यह कार्य कोई दूसरा नहीं कर सकता। यह कार्य केवल दलितों, पिछड़ों, शोषितों के हाथों ही होना है।

ऐसी हर व्यवस्था व सोच समाप्त हो जो लोगों में दरार पैदा करती है, समाज को जोड़ने की बजाय तोड़ती है। साथ ही समाज से वह हर बुराई व गन्दी सोच खत्म हो जो इंसान-इंसान में भेद करे, असमानता की बात करे, क्योंकि जीत केवल बांटने वाले की होती है, छीनने व लूटने वाले की नहीं। जिन लोगों को हजारों सालों से उनके अधिकारों से वंचित रखा गया, उनका उत्पीड़न किया गया, उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया गया, उनको उनका हक, हर क्षेत्र में मिले, अब ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो, भूमि वितरण का क्षेत्र हो, सामाजिक न्याय का क्षेत्र हो और सत्ता में भागीदारी का क्षेत्र हो। गरीबों व दलितों को समय रहते उनके ये मूल-भूत मौलिक अधिकार मिल जायेंगे, तब इस देश में अमन-चैन का राज होगा और देश विकास के हर क्षेत्र में तेज़ी से आगे बढ़ेगा। यह देश, दलितों, शोषितों, वंचितों का था, इन्हीं का है और इनका ही रहेगा। आज नहीं तो कल, इसे कोई रोक नहीं सकता।



# दो बातें

दलित समाज में पढ़ने-लिखने का प्रसार आशाजनक नहीं तो कुछ तो जरूर हुआ है। ऐसे परिवारों में रहन-सहन, बातचीत, समाज में और समाज के बाहर कैसा तौर-तरीका हो, कैसा व्यवहार हो, इन बातों में कुछ बदलाव जरूर आया है। इसके साथ ही, ऐसे परिवार अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण, उनकी देखभाल और उनको अच्छी शिक्षा दिलाने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। लेकिन ऐसे परिवारों की संख्या बहुत ही कम है जिस पर हमें संतोष करके नहीं बैठ जाना चाहिये।

हम बाल-बच्चों का लालन-पालन करने में चाहे भले ही सोने का निवाला देना शुरू कर दें, हमारे बच्चों की नींव कुछ कमजोर ही रहती है जिसके बहुत से कारण भी हैं। इसमें सबसे बड़ा कारण था जो थोड़ा बहुत कहीं-कहीं आज भी है। छोटी उम्र में बच्चों की शादी। जो अभी खुद ही बच्चे थे (या हैं) जिन्हें शादी का मतलब नहीं पता, पति-पत्नी के रिश्ते और कर्तव्यों का नहीं पता, ऐसे बच्चों को शादी के बन्धन में बांध दिया। और यह सोच लिया जाये कि अब परिवार आगे बढ़ेगा। समाज की तो चिंता ही छोड़ दीजिये।

जब हमारे समाज का नवयुवक इस योग्य हो जाये कि शादी का ठीक से मतलब समझ जाये, पति-पत्नी के रिश्ते को भलीपूर्वक जान ले और उसमें इतना सामर्थ्य हो कि इस रिश्ते को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा सके तभी ऐसे युवक को शादी के बंधन में बांधना चाहिये। फिर उस युवक को इस जिम्मेदारी को निभाने में और पूरा करने में कतई कमजोरी नहीं दिखानी चाहिये और अपनी पत्नी को वह हर खुशी दे जो वह दे सकता है। वैसे तो ऐसे युवक का दायित्व मां-बाप, छोटे भाई-बहन के रहते हुए और भी बढ़ जाता है। लेकिन उस युवक की स्थिति ऐसी है कि उसे 'बैलेंस' बनाके चलना पड़ता है। एक तरफ मां-बाप की सुख-सुविधा का दायित्व, साथ ही साथ छोटे या बड़े भाई-बहन की भी देखभाल और पत्नी को भी खुश रखना, यह तालमेल कितना भी बिठा ले (घर की बहू) कम है। बहुत ही मुश्किल और जोखिम भरा काम है।

अब थोड़ी सी बात कर लें उस लड़की की जो ऐसे घर में बहू बनकर आई है। उसके लिये तो सारा घर अजनबी है। वह घर के लोगों के सोच-विचार, उनकी पसंद-नापसंद के बारे में कुछ भी नहीं जानती है। पर उसका कर्तव्य है कि वह यह सब कुछ समय रहते जान ले। पति के साथ-साथ वह घर के सभी सदस्यों का भी पूरा-पूरा ख्याल रखे। उसका यह भी फर्ज है कि अपनी बातों से या अपने कामों से घर के सभी सदस्यों का दिल जीत ले। ऐसे गुणों की सभी अपेक्षा करते हैं।

कोई भी मां-बाप या बहन-भाई नहीं चाहता कि वह लड़की जो उनके घर में बहू बनकर आई है, वह मां-बाप से उनका बेटा छीन ले और बहन-भाई से उनका भाई। उस बहू को भी पलड़े बराबर रखकर अपनी गृहस्थी को आगे बढ़ाना है।

यह एक सामाजिक स्वीकृति भी है कि पति-पत्नी अपनी गृहस्थी सुख शांति और सफलतापूर्वक चलायें और घर परिवार को आगे बढ़ाये। उस घर-परिवार के हर सदस्यों के साथ-साथ खास रिश्तेदारों का भी यह फर्ज या दायित्व बन जाता है कि सभी उस युवा दम्पत्ति की पूरी-पूरी देखभाल करें, उन्हें सही-सही मार्ग दर्शन दें क्योंकि वे दोनों ही नासमझ से होते हैं। खास देखभाल की बात तब शुरू होनी चाहिये जब घर के लोगों को यह मालूम हो जाये कि उनकी बहू गर्भ से है और एक जीव को जन्म देगी। किसी भी उस बहू की जिन्दगी में यह एक नई अनुभूति होती है जब वह ऐसा महसूस करती है कि वह एक बच्चे को जन्म देने की अवस्था में पहुंच चुकी है। उस बहू की पूरी गर्भावस्था की स्थिति में उस घर के प्रत्येक सदस्य का दायित्व और भी बढ़ जाता है। उस बहू के गर्भ में पड़ी हुई नींव को सभी घर परिवार वालों ने मिलजुल कर मजबूत करना है क्योंकि वह बहू उस घर को एक चिराग दे रही है और उस घर का भविष्य पल रहा है उसकी कोख में।

ऐसी स्थिति में उस बहू की सुख सुविधा के साथ-साथ उसके खान-पान पर भी विशेष ध्यान देना चाहिये क्योंकि जो भी जैसा भी वह बहू खायेगी व उन सभी का सीधा असर उसके पेट में पल रहे बच्चे पर पड़ेगा। जैसा वह सोचेगी, जैसी-जैसी अच्छी-अच्छी और ज्ञान-ध्यान की बातें वह करेगी उन सबका भी सीधा असर उस बच्चे पर पड़ेगा। जितनी अच्छी-अच्छी पुस्तकें, महापुरुषों की जीवनियां वह पढ़ेगी उन सभी का सीधा असर बच्चे पर पड़ेगा। मोटे तौर पर हम यूं कह सकते हैं कि वह जितना अच्छा समझदारी, ज्ञानवर्धक, सोच-विचार, कर्त्तव्यनिष्ठा, खानपान, आचरण ठीक ठाक रखेगी, वैसे ही गुण और संस्कार उस बच्चे में जरूर बनेंगे और बनेगा रोशन और उज्ज्वल भविष्य उस घर-परिवार का और उस समाज का जिसमें उसने जन्म लिया है। इतिहास भी यह बताता है कि जितने भी महापुरुष इस देश में जन्में हैं उनको गर्भावस्था के समय वह सब कुछ भरपूर मिला और ऐसे संस्कार मिले जिन्हें पाकर वे महान बने और उनका नाम देश-विदेश में आज भी गौरव, शान और सम्मान से लिया जाता है। वे सभी अपने-अपने महान कार्यों की बदौलत सदा के लिए अमर हो गये।

जो दलित परिवार ऊपर कही बातों को ठीक समझते हैं उन्हें अपनी क्षमता अनुसार इन बातों पर जरूर अमल करना चाहिए। मेरा विश्वास है कि उनका यह



कदम कल्याणकारी ही होगा। समस्त दलित समाज पर यह उनका सबसे बड़ा उपकार होगा क्योंकि इन परिस्थितियों में पैदा हुये बच्चे किसी भी अन्य बच्चे से किसी भी तरह उन्नीस नहीं होंगे बल्कि इक्कीस ही साबित होंगे। शायद, फिर आपको किसी के रहमो करम पर जीने की आवश्यकता ही न पड़े।

जहां तक बहुत ही गरीब दलित परिवारों की बात है। हम मान लेते हैं कि वे शायद इतना सब कुछ न कर पायें परन्तु फिर भी वे इतना तो जरूर ही कर सकते हैं कि उनकी जो बहू गर्भवती है उसे जो भी रूखा-सूखा खिलायें, बड़े प्यार से खिलायें उससे कोई रंज, गम, तकलीफ, दुख, मुसीबत की बात न की जाये। गरीब दलित कैसी तंग जिंदगी जीते हैं यह भी किसी से छिपा नहीं है। फिर भी गरीब को अपनी गरीबी में ही जीना पड़ता है, अपने अभावों में ही संतोष करना पड़ता है क्योंकि उसके पास इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं है। लेकिन इन सब बातों के बावजूद उस गर्भवती महिला का अभावों की चिंता किये बगैर खुशी-खुशी दिन बिताना और अपने मन व दिल पर किसी भी प्रकार का बोझ महसूस नहीं करना, एक अच्छे और गुणकारी बच्चे पैदा करने की दिशा में बहुत ही सराहनीय कार्य माना जायेगा और समस्त दलित ऐसे घर और उस महिला के अति आभारी होंगे।

बच्चे के पैदा होने के बाद सभी परिवारजन मां और बच्चे की सेवा और देखभाल में लग जाते हैं। यह भी बात सही है कि मां बच्चे की बाद की देखभाल उनकी सेवा का भी मां-बच्चे पर असर पड़ता है। लेकिन बच्चा पैदा होने के बाद की देखभाल और उस समय की देखभाल जब बच्चा गर्भ में हो, में इतना फर्क है जितना जमीन और आसमान में, जितना दिन और रात में।

ये सभी बातें साधारण सी लगती हैं लेकिन अगर इन पर अमल हो जाये परिणाम तभी सामने आते हैं। साईंस भी इन बातों को अब बहुत मान्यता देने लगी है। ऐसा करने से एक बात जो स्वतः स्पष्ट हो जायेगी—वह है नारी का सम्मान जो कि जगत की जननी है। किसी ने कहा भी है कि नारी सृष्टि है, वह शक्ति है अगर उसका संचालक योग्य है। वरना नारी विनाशकारी है अगर उसका चलाने वाला अयोग्य है।

## बाबा साहब के मूल मंत्र

इस देश के सामाजिक जीवन और दलित, शोषित, वंचितों की कटु पीड़ा का अनुभव करते हुये बाबा साहब ने समाज में व्यापक सुधार लाने हेतु तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धांत रखें। उनमें सबसे पहले है — 'आजादी' यानि स्वतन्त्रता।

आजादी का अनुभव एक ऐसा अनुभव है जैसे कोई इंसान किसी लम्बी कैद से छूटा हो। घुटन भरी जिंदगी से बाहर आया हो। एक आजाद इंसान ही दूसरे सिद्धांत की तरफ बढ़ता है जिसे 'समानता' कहते हैं क्योंकि सिर्फ एक आजाद इंसान ही दूसरे इंसान के प्रति समानता के भाव रख सकता है, दूसरा नहीं। जब आजादी और समानता की बात होगी तो तीसरे सिद्धांत की कड़ी जिसे 'बन्धुत्व' कहते हैं स्वयं जुड़ जायेगी। जब इन तीनों बुनियादी सिद्धांतों का समावेश होगा, जिस पर सारा समाज टिका है, तो वहां पारस्परिक व्यवहार भी अत्यंत मधुर, प्रेमपूर्ण, सौहार्दपूर्ण होगा और फिर बनती है सामाजिक बन्धनों की एक शक्तिशाली एवं मजबूत कड़ी जिसकी आज के समाज में बहुत ही आवश्यकता है।

इसके साथ ही बाबा साहब ने जो दलित, शोषित, वंचित समाज को एक और भी अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली मूल मंत्र दिया था वह है शिक्षा ग्रहण करने का, संगठित रहने का और अपने अधिकारों के लिये संघर्ष करने का।

शिक्षा ग्रहण करने का मतलब है अंधेरे से रोशनी की तरफ पहला कदम। जैसे-जैसे और जितना अधिक से अधिक और जितनी तेजी से आप ऊंची शिक्षा ग्रहण करते जायेंगे, उतनी ही तेजी से भय का भूत आपके अन्दर से गायब होना शुरू हो जायेगा। डर नाम की चीज आपको बेमानी लगने लगेगी। आप अपने में एक नया ही रूप पायेंगे। एक नया रूप जिसमें आत्म विश्वास और स्वाभिमान है और इसी के साथ शुरू हो जायेगा आपके जीवन में चमत्कार।

कोई भी इंसान जितनी ज्यादा से ज्यादा शिक्षा पाता जायेगा, उसका ज्ञान सागर उतना ही बढ़ता जायेगा। समाज के लिये कुछ भला करने का विचार स्वयं दिल-दिमाग में आयेगा। दिमाग की ताकत बढ़ने के साथ-साथ सोचने समझने की क्षमता भी बढ़ेगी। एकता की बात बनेगी। समाज को इकट्ठा करने की बात बनेगी। एक मजबूत संगठन पैदा करने की बात बनेगी क्योंकि एक मजबूत संगठन ही समाज की असली ताकत है। एक सुदृढ़ और संगठित समाज किसी भी समस्या और मुसीबत का भली-भांति मुकाबला कर सकता है। समाज को संगठित करके हम बाबा साहब के दूसरे मूलमंत्र का पालन करते हैं।

तीसरा मूल मंत्र है—संघर्ष। जब किसी समाज में शिक्षित और ज्ञानी लोग होंगे और साथ में होंगे संगठित भी, तो दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकत भी ऐसे समाज का मुकाबला नहीं कर सकेगी। ऐसी स्थिति में आपकी समस्यायें एक-एक करके कम होती जायेंगी। फिर शायद आपको संघर्ष करने की आवश्यकता ही न पड़े। किसी ने सच ही कहा है कि संगठन के सामने तो भूत के पैर भी कांपते हैं।



इन्हीं बातों के साथ जुड़ा है—अनुशासन। संगठित समाज और ऊपर से अनुशासित भी, यह तो सोने पे सुहागा जैसा काम हुआ। ऐसी स्थिति का एक और फायदा है कि आप को कोई भी आसानी से गुमराह नहीं कर सकता। जो लोग ढोंगों, कुचक्रों, पाखंडों, अंधविश्वासों, जन्म-मरण और पुनर्जन्म आदि के हेर-फेर में पड़े हैं, उन्हें हम कह सकते हैं कि ऐसे लोग गुमराह हैं। इन लोगों के दिल, दिमाग, सोच-समझ कुंठित एवं दूषित होती है। ऐसे लोग अपनी तो जेबे भरेंगे और खूब मौज मस्ती से जियेंगे लेकिन समाज को पथ भ्रष्ट कर देंगे, आपस में लड़वा देंगे, नफरत फैला देंगे। दलित, वंचित समाज को ऐसे भ्रमजाल और कुचक्रों से बचना है, इन से सावधान रहना है। इन बातों से बचने का केवल एक ही उपाय है कि हम सभी बाबा साहब के बताये हुये मूलमंत्रों को पूरे विश्वास, दृढ़ता और निष्ठा के साथ अपनायें, उन पर अड़िग रहें और उन पर सच्ची लगन, श्रद्धा और निष्ठा रखते हुए आगे कदम बढ़ाये। यही सिलसिला सफलता और कामयाबी की गारंटी है।

अगर हम आजादी के बाद के 53 सालों पर नजर डालें तो हम पायेंगे कि जिन-जिन लोगों ने बाबा साहब के मौलिक सिद्धांतों, आदर्शों और मूलमंत्रों पर ईमानदारी और सच्ची लगन से अमल किया है वे जीवन पथ पर कामयाबी से आगे बढ़े हैं। हम जो आज देखते हैं वह आजादी से पहले कभी नहीं था। सैंकड़ों-हजारों साल पहले हम अपने पुर्खों-बुजुर्गों के जीवन के बारे में सहज ही अनुमान लगा सकते हैं। जिन लोगों ने दलितों, वंचितों को दबाया और कुचला उनके मन में आज भी नफरत और भेदभाव का जहर भरा हुआ है। यह उनकी मजबूरी ही है कि यह देश आजाद है, लोकतंत्र है, गणतंत्र है। हमारा अपना संविधान है जिसके द्वारा सभी नागरिकों को समान अधिकार मिले हुए हैं और दूसरे भी कानून हैं। फिर भी ये लोग कहीं न कहीं आये दिन अपनी शैतानियों और हैवानियतों से बाज नहीं आते। हम लोगों का थोड़ा बहुत सुख चैन का जीवन इनको खटकता है। हमारे कुछ लोगों के सुखी जीवन से ये बेचारे बहुत ही दुखी हैं। जैसे-जैसे हम बाबा साहब के सपनों को पूरा करेंगे इनका दुख उतना ही गहराता जायेगा जिसमें आखिरकार ये लोग स्वयं ही डूब जायेंगे। यही इनकी इति होगी। हम तो केवल ऐसे लोगों में सद्बुद्धि की कामना कर सकते हैं।

## छल-कपट से भरा—हिन्दू समाज

कहने को तो हिन्दू समाज यह कहते कभी नहीं थकता कि हिन्दू समाज के लोग अति सभ्य, शालीन, विशाल हृदय और सहनशील होते हैं। लेकिन अगर हम हिन्दू समाज के कारनामों पर नजर डालें तो आपको सहज ही पता चल जायेगा कि इन

लोगों का वास्तविक जीवन बिल्कुल ही अलग है और विरोधाभासों से भरा पड़ा है। जैसा ये लोग अपने आपको सोचते, समझते हैं और जनता के सामने दर्शाते हैं, इनके कार्यकलाप बिल्कुल इसके विपरीत होते हैं। इतिहास के पन्नों पर अगर नजर डालें तो पता चलेगा कि हिन्दू समाज कितना निर्दयी, अमानवीय, हिंसक, कारनामों का पिटारा है।

इस सदंर्भ में हम चर्चा शुरू कर सकते हैं महाभारत काल से। यह बात सबको मालूम है कि गुरू द्रोणाचार्य पांडवों और कौरवों में से पांडवों का ही ज्यादा चाहते थे। पांडवों में भी सबसे ज्यादा शायद अर्जुन को । द्रोणाचार्य यह भी इच्छा रखते थे कि अर्जुन संसार का सबसे निपुण धनुधर बने। इसके मुकाबले का कोई और धनुर्धर न हो। उधर एक भील जाति का बालक एकलव्य भी बाण चलाने की चाह रखता था। कहने को तो एकलव्य द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति को आदर्श मानकर धनुष बाण चलाना सीख रहा था पर वास्तव में तो एकलव्य को किसी ने भी धनुष-बाण चलाने का प्रशिक्षण नहीं दिया था। वह तो केवल अपनी सच्ची लगन और दृढ़ संकल्प के बल पर ही धनुष चलाना सीखता रहा। धनुष चलाने की कला में एकलव्य ने इतनी महारत हासिल कर ली थी कि द्रोणाचार्य के भौंकते हुये कुत्ते का मुंह उसने जंगल में अपने चलाये हुये बाणों से कुछ इस तरह से भर दिया था कि न तो कुत्ते को कोई चोट लगी और न ही कोई अन्य तकलीफ, और साथ में कुत्ते का भौंकना भी बंद हो गया था। कुत्ते की ऐसी दशा देखकर द्रोणाचार्य बहुत ही हैरान हुये। पूछने पर पता चला कि कुत्ते के मुंह को भील बालक एकलव्य ने अपने चतुराईपूर्ण चलाये बाणों से भर दिया जिससे कुत्ता भौंक नहीं सकता था। यह बात जानकर द्रोणाचार्य लज्जित और हैरान होने के साथ-साथ मन ही मन चिंता में पड़ गये कि जो बालक बिना गुरू ज्ञान के इतना निपुण धनुषधारी हो सकता है, वह गुरू ज्ञान मिलने पर कितना महान और श्रेष्ठ धनुषधनी हो सकता है?

वास्तव में द्रोणाचार्य एकलव्य की धनुविद्या से इतने प्रभावित, चिंतित और विचलित हुए कि उन्हें अर्जुन का भविष्य खतरे में नजर आया जिसको वे संसार का सबसे उत्तम और निपुण धनुषधारी मानते थे। इसी चिंता की स्थिति में द्रोणाचार्य ने गुरू-शिष्य को महिमा और मर्यादाओं को ताक पर रखकर और अत्यंत ही छल-कपट और धोखे से भोले-भाले वीर भील बालक एकलव्य से गुरू दक्षिणा देने का वचन मांग लिया जिसका उन्हें बिल्कुल भी अधिकार नहीं था क्योंकि वास्तव में द्रोणाचार्य ने बालक एकलव्य को परोक्ष या अपरोक्ष तरीके से किसी प्रकार की धनुष विद्या की शिक्षा ही नहीं दी थी। वैसे भी सामान्य तौर पर किसी भी गुरू ने अपने किसी भी शिष्य को किसी भी प्रकार की शिक्षा या ज्ञान देने के बाद, उस शिष्य से उसके द्वारा प्राप्त ज्ञान या शिक्षा को, गुरू दक्षिणा के नाम पर कभी वापस नहीं मांगा और वह भी इतने निर्दयी और क्रूरतापूर्ण ढंग से। द्रोणाचार्य ने गुरू शिष्य के पवित्र संबंधों को तिलांजलि देते हुये, मान-अपमान की परवाह न करते हुये, वीर भील बालक एकलव्य का दायें हाथ का अंगूठा गुरू दक्षिणा में भेंट-स्वरूप मांग लिया। उधर उस वीर भील बालक एकलव्य का साहस व हौसला देखिये कि बिना किसी भय व चिंता के हंसते-हंसते उसने अपने दांये हाथ का अगूंठा तुरंत काट कर द्रोणाचार्य को अर्पण कर दिया। ऐसा निर्ल्लजतापूर्ण उदाहरण दुनिया के इतिहास में शायद ही कोई मिले। वीर भील बालक एकलव्य अपने इस अनूठे कार्य से हमेशा-हमेशा के लिए इतिहास में अमर हो गया। दूसरी ओर द्रोणाचार्य अपने जघन्य कार्य से आनेवाले गुरूओं के लिए एक कलंकित यादगार छोड़ गया।

रामायण काल में एक बहुत ही निपुण और आदर्शवासी ऋषि हुये हैं जिनको 'शम्बूक' नाम से जाना जाता है। ऋषि शम्बूक ने घोर तपस्या की थी और देवताओं से अनेक वरदान प्राप्त किये थे। अयोध्या राजा राम को जब ऋषि शम्बूक की घोर तपस्या का पता चला तो उन्हें अपने राज्य का सबसे पहले भय खाया। उन्होंने क्षत्रिय धर्म की महिमा और मर्यादाओं को ताक पर रखते हुये, ऋषि शम्बूक की बड़ी ही निर्दयता के साथ हत्या कर दी जब वे घोर तपस्या में लीन थे। ऋषि शम्बूक का अपराध केवल इतना था कि वे दलित समाज से संबंधित थे और दलितोद्धार के लिए घोर तपस्या कर रहे थे। लेकिन हिन्दू समाज को यह कहां मंजूर था कि कोई दलित अपनी घोर तपस्या से देवताओं से वरदान प्राप्त कर ले।

राजा राम का अत्याचार यहीं खत्म नहीं हुआ था। राजा बालि से तो राम का कोई बैर या दुश्मनी नहीं थी। अगर राजा बालि का उसके अपने भाई सुग्रीव से कोई झगड़ा था तो वह उनका आपस का पारिवारिक मामला था। फिर भी अगर राम सुग्रीव की बालि के साथ लड़ाई में कोई मदद करना ही चाहते थे तो वह बालि से सीधे युद्ध कर सकते थे। लेकिन यहां भी राम ने क्षत्रिय धर्म की महिमा और मर्यादाओं की परवाह किये बिना वीर राजा बालि की सुग्रीव के साथ द्वंद्व युद्ध करते समय पेड़ों के पीछे छुपकर अपने तीर से अन्यायपूर्ण तरीके से हत्या कर दी। ऐसे ही और भी काफी उदाहरण हैं जो इतिहास के पन्नों में दबे पड़े हैं जहां दलितों पर घोर अन्यायपूर्ण अत्याचार हुये और दलित सहते रहे।

# दलित विरासत

इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि महाभारत जैसे ग्रंथ को लिखने वाला वेद व्यास एक दलित मछुआरे की कन्या से पैदा हुये थे। इसी प्रकार रामायण को लिखने वाले ऋषि वाल्मिकी भी दलित समाज से थे। भारत देश के संविधान की रचना भी एक प्रख्यात दलित 'भारत रत्न' बाबा साहब डा. भीम राव अम्बेडकर ने ही की है। इसके साथ ही आजादी के बाद देश के निर्माण कार्यों में और इस देश की सम्पत्ति और सम्पदा बढ़ाने में भी इस देश के दलितों का योगदान सबसे अधिक रहा है। इस सबके बावजूद इस देश को सम्पत्ति और सम्पदा में दलितों की भागीदारी न के बराबर है । इस पर एक बहुचर्चित कहावत भी याद आती है कि 'अंधी पीसे, कुत्ता खायें'। मतलब मेहनतकश मेहनत करके धन सम्पदा जुटाये', सम्पत्ति बढ़ाये और 'निठ्ठले बैठ कर मौज मनाये'। यही इस देश की नियति बनी हुई है जिसको बहुत ही जल्द बदलना होगा। ऐसी हालत चलते देश का भविष्य सुरक्षित नहीं।

जहां तक बाबा साहब जैसी महान हस्ती का सवाल है, यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि जिस दिन से उन्होंने दलितों, शोषितों, पीड़ितों के लिए समाज में समानता की बात शुरू की और समाज में उनको अधिकार देने की बात की, जिनसे उन्हें अभी तक वंचित रखा गया है, उसी दिन से और उनके अंतिम दिनों तक उनके दुश्मनों की संख्या बढ़ती ही गई थी, कम नहीं हुई थी। बाबा साहब के विरोधियों ने कभी भी ऐसा मौका नहीं गंवाया जब उन्होंने बाबा साहब द्वारा कही गई किसी भी बात का विरोध न किया हो, उन्हें प्रताड़ित और अपमानित न किया हो। उन्हें समय-समय पर देशद्रोही भी कहा गया। उनके विरोधी भी भली-भांति यह जानते थे कि बाबा साहब का रास्ता न्याय संगत है, विवेकपूर्ण है और जीवन मूल्यों और मानवता से प्रेरित है स्वयं गांधी जी भी और दूसरे कांग्रेसी नेता भी बाबा साहब के तर्कों को स्वीकारते थे, उन्हें मानते थे लेकिन फिर भी जानबूझकर बाबा साहब को नीचा दिखाने की कोशिशें लगातार होती रहती थी। यही बात सबसे अचरज की भी है कि बाबा साहब की जिन बातों से कांग्रेस के अन्य बड़े नेता सहमति रखते थे, उन्हें मानते थे तो उन्हीं बातों का विरोध भी करते थे। आखिर क्यों ? सिर्फ बाबा साहब को नीचा दिखाने और हौसले पस्त करने के लिए। बाबा साहब को कांग्रेस का कोई भी नेता नहीं चाहता था कि अछूत समाज में जन्मा कोई व्यक्ति उनसे ज्यादा अच्छी बात कह दे या वह अपने समाज, देश व दुनिया की नजरों में महान व्यक्ति बन जाये। बाबा साहब ने अपने तमाम विरोधियों का सामना करते



हुये कभी भी धैर्य और साहस नहीं खोया। कठिन परिस्थितियों में भी अपने मानसिक संतुलन को कभी भी बिगड़ने नहीं दिया। यही बाबा साहब की सबसे बड़ी विशेषता थी। इसी कारण उनके तमाम विरोधियों की चालें नाकामयाब हुई और उन्हें हमेशा निराशा ही हाथ लगी। बाबा साहब का पक्ष न्याय संगति पूर्ण होने के साथ-साथ जीवन मूल्यों और मानवीय अधिकारों और आकांक्षाओं से संबंधित था। उनके तर्कों में तड़प थी और दर्द साफ झलकता था, जबकि दूसरे लोगों को अमानवीय परिस्थितियों से कभी नहीं गुजरना पड़ा। इसलिये उनके विरोधी उनकी बातों से केवल सहानुभूति का ही भाव रखते थे इससे ज्यादा कुछ भी नहीं। हां, इतना जरूर है कि अंग्रेजों के अतिरिक्त बहुत कम ही देश के कुछ बड़े नेताओं ने बाबा साहब की भावनाओं, उनके देश-प्रेम, उनकी देश भक्ति, उनके देश की आजादी में योगदान, देश की एकता और अखंडता को बचाने जैसे अद्वितीय कार्य तथा संविधान निर्माण के अभूतपूर्व कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इस सबके बावजूद आज भी हालात यह है कि कोई भी सामाजिक व्यवस्था को बदलने की बात जोरदार तरीके से नहीं करता। केवल कुछ खास अवसरों पर औपचारिकता पूरी कर ली जाती हैं। मगर सम्पूर्ण सामाजिक क्रांति की बात कोई नहीं करता। चाहे दलित नेता हो या गैर दलित, सभी को अपनी-अपनी पड़ी है।

# दोहरी मानसिकता

हां, आज के वक्त में इतना परिवर्तन तो जरूर देखने को मिल रहा है कि सभी छोटे-बड़े राजनैतिक दलों के दिलो-दिमाग में बाबा साहब के नाम का भूत, दिखावे के लिये ही सही, बुरी तरह से उनके अंदर बैठ गया है। इनका कोई भी कार्य बाबा साहब की तस्वीर को अग्रिम पंक्ति में लगाने के बिना पूरा नहीं होता। सभी बाबा साहब के नाम की दुहाई देकर उनके अनुयाइयों को गुमराह करने की कोशिश में दिन-रात लगे रहते हैं। क्योंकि अब उनको यह पक्का विश्वास और अहसास हो गया है कि बाबा साहब के अनुयाइयों के सहारे के बिना उनकी राजनैतिक दुकान ज्यादा दिन नहीं चलने वाली। लेकिन बाबा साहब के अनुयायी भी अब इतने नासमझ नहीं रह गये हैं। वे भी अब यह जान गये हैं कि जो हमारे शुरू से दुश्मन रहे हैं वे केवल बाबा साहब की तस्वीर को आगे रखकर और उनके नाम की दुहाई देकर दलित, वंचित, पीड़ित समाज को ललचाने, लुभाने और गुमराह करने की कोशिश में लगे हुये हैं। उनके दिलों में खोट है और उन्हीं की कहावत उन्हीं पर चरितार्थ होती है कि 'मुंह में राम बगल में छुरी'।

सभी को मालूम है कि पिछले दिनों, महाराष्ट्र के इलाके में भयंकर भूकम्प आया था। लाखों लोगों की जान-माल का नुकसान हुआ था जिसमें गांव के गांव तबाह हो गये और हजारों लोग मौत के शिकार हुये थे। इसी तरह उड़ीसा राज्य में भी भयंकर समुद्री तूफान आया था। उसमें भी लाखों लोग बेघर हुये, लाखों लोग और पशु-जानवर मौत के शिकार हुये थे। ठीक इसी तरह 26 जनवरी, 2001 को गुजरात में भी एक भयंकर भूकम्प आया जिस में भी जान माल का बहुत ही ज्यादा नुकसान हुआ। ये सभी घटनायें बड़ी दर्दनाक व भयावह थीं। ये सभी प्राकृतिक विपदायें थीं इनमें किसी का कोई दोष नहीं। लेकिन बड़ी शर्मनाक बात है कि हिन्दू समाज की जो स्वयंसेवी संस्थायें इन दुर्घटनाओं के बचाव कार्यों में लगी हुई थीं उन सभी ने दलितों की लाशों को उठाना तो दूर, उन्हें छूने से भी इंकार कर दिया था। दलितों की लाशों को उठाने वाला कोई नहीं था और उनकी लाशें सड़ती रहीं। जीने पर तो उनसे छुआछात की जाती है पर मरने पर भी उससे ज्यादा बुरा व्यवहार होता है।

गुजरात में भूकम्प आने पर पंजाब की कुछ सिख संस्थाओं ने राहत सामग्री के रूप में भोजन व्यवस्था के लिए जरूरी चीजों के साथ एक सहायता दल भेजा था जिसका काम भूकम्प पीड़ितों को बाकी सहायता मिलने तक, सबसे पहले खाना खिलाने का था। शुरू-शुरू में तो सभी भूकम्प पीड़ितों ने लाईनों में बैठकर साथ-साथ खाना लिया। लेकिन बाद में तथाकथित ऊंची जाति के पटेल लोगों ने दलितों के साथ लाइनों में बैठकर खाना खाने से इंकार कर दिया। इस पर सिख भाइयों ने जैसे तैसे समझा-बुझाकर दलितों और अन्य लोगों के खाने की व्यवस्था अलग-अलग कर दी। इसके बाद दूसरे लोगों ने एक ओर समस्या पैदा कर दी की लाईनों में बैठकर खाना उनकी शान के खिलाफ है, लिहाजा खाना उनके रहने के स्थान पर भेजा जाये। सिख भाइयों ने सोच समझकर इस बात को भी मान लिया। लेकिन इसके बाद भी ऊंची जाति के लोगों ने एक ओर समस्यां पैदा कर दी कि वे किसी दूसरे के हाथ का बना हुआ खाना नहीं खायेगें। इसलिए बने हुये खाने की बजाय उन्हें भोजन की सामग्री सूखी यानि बिना पके, उनके पास भेजी जाये। यह कितनी घटिया और अमानवीय सोच यह है और वह भी ऐसे प्राकृतिक विपदा की घड़ी में? ऐसी लोगों को इन्सान कहना तो इन्सानियत की तौहीन करना है।

जो लोग यह दावा करते हैं कि हिन्दू लोग पवित्र, धैर्यवान, सहनशील है और सागर जैसा हृदय रखते हैं, उनकी ये बातें सच्चाई से कितनी दूर हैं? इसके



विपरीत अगर कोई धैर्य, सहनशीलता, पारस्परिक भाईचारा, मेलजोल, बन्धुता, दया और करुणा ढूंढ़ना चाहे तो वह केवल दलितों में ही मिलेगी। क्योंकि उन्होंने जीवन-भर दुख-तकलीफ, यातनायें व अत्याचार सहे हैं। इसीलिए कठिन समय और खासकर विपदाओं में दलितों का योगदान सबसे ज्यादा होता है। पारस्परिक सहयोग और कर्त्तव्य भावना दलितों में कूट-कूट कर भरी हुई है।

## युग बदलेगा

दलितों को कोई कुछ भी समझे लेकिन इनके दिल विशाल होते हैं। ये सही और सच्ची बात के धनी है। सबसे बड़ी बात है कि दलित अहिंसक होता है। वह किसी पर अनायास वार नहीं करता, केवल बचाव में ही लगा रहता है क्योंकि दलित की सोच कभी आक्रमकता की नहीं रही, मिटाने की नहीं रही, तोड़ने-फोड़ने की नहीं रही, किसी की दुख, हानि या नुकसान पहुंचाने की नहीं रही। दलित की सोच रही है जोड़ने की, मिलाने की, बनाने की। कुछ रचनात्मक करने, कुछ सकारात्मक करने की, कुछ ऊपर उठने की, कुछ ऐसा करने की जिसमें शान बढ़े पर शर्मिन्दगी न उठानी पड़े, अपमानित न होना पड़े। कुछ साहसिक काम करने की, कुछ ऐसा खास करने की जो दूसरा न कर पायें लेकिन बावजूद इसके आज का दलित पीड़ित जरूर है लेकिन भूखा नहीं है, पिटा जरूर है लेकिन हार नहीं मानी है, पराश्रित है लेकिन पूरी हिम्मत के साथ डटकर खड़ा है। डटकर खड़ा है आने वाले कल के लिये जो उसका अपना है क्योंकि बाबा साहब के दिखाये रास्तों पर चल कर और उनके बताये हुये मूल-मंत्रों पर चलकर उसने बाबा साहब के सपनों को साकार कर हकीकत में बदलना है, उन्हें सच करना है। वह दिन अब ज्यादा दूर नहीं जब इस भारत देश की तकदीर दलित के हाथों लिखी जायेगी क्योंकि दलित ही इस देश का निर्माता है, इस देश की रीड़ है, इस देश की आन, बान और शान है। जब सारा संसार इस देश को सोने की चिड़िया कहता था तब दलित ही इस देश के शासक थे जिन्हें छल, कपट और विश्वासघातों से खत्म किया गया। यह भारत देश दलितों के हाथों एक बार फिर सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश बनेगा और यहां गूंजेगे गुरू रविदास, गुरू नानक, सन्त कबीर और महात्मा बुद्ध की वाणियां, बाबा साहब डा. अम्बेडकर के संदेश जिनकी आज के संसार को और भी अधिक जरूरत है। हमें इन्हीं महापुरुषों के सपनों को साकार करना है, उनके वचनों को, उनके उपदेशों को और उनकी वाणियों को प्रचारित और प्रसारित कर समस्त मानव समाज का कल्याण करना होगा। इसी से संसार में शांति स्थापित होगी और सुख व खुशहाली फैलेगी।

## अब तो जागो

दलित समाज से मैं इतना ही निवेदन करूंगा कि—
बहुत सो चुके,
बहुत खो चुके,
अब जागन की बारी,
अब नहीं जागा तो
तब जागेगा
जब मार पड़ेगी भारी।
इसलिये हे दलितों, खुद जागो और औरों को जगाओ,
क्योंकि कल का सवेरा तुम्हारा है, सिर्फ तुम्हारा।
**किसी की मुट्ठी में नहीं है कैद**
**रोशनी व तकदीर किसी की**

## बाबा ने कहा था

कौन से मजहब में लिखा है
कि नफरत कीजिये
सारे मजहब एक ही हैं,
ये फैसला लीजिये।
धर्म क्या है, जात क्या है
रस्मों का एक जाल है
देख लो दुनिया में
सब का खून लाल है।

हम को ऐ लोगों तुम
यूं भुला ना पाओगे
हम भी आयेंगे एक दिन,
यूं मिसालों में।
खुद बने राहें चिराग,
खुद ही मंजिल
हर अंधेरे को लाये,
यूं उजालों में।

अरे भाई, जरा सोचो।
अरे भाई, जरा सोचो।
क्या बात है कि सब के दिलों में
रह रहा है वो शख्स
सबके घरों की
नुमाई बन गया।
कोई कमी ना थी, उसमें शायद
इसलिये वो शख्स
हर दिल ख्वाहिश बन गया।

मरना तो है नियम जगत का,
हर प्रभात की शाम है
लेकिन कुछ ऐसे मिटने वालों का
कभी ना मिटता नाम है।
अजर अमर हो गये काम से
जय जय बाबा भीम
तुम्हें प्रणाम है, तुम्हें प्रणाम है।